चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13-4-23	9	6-7

डॉ. सरिता रानी को मिला डॉ. एमएस स्वामीनाथन अवार्ड

हिसार। डॉ. सरिता रानी को सम्मानित करते एचएयू कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज।

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कुरुक्षेत्र में कार्यरत जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) डॉ. सरिता रानी को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने पर डॉ. एमएस स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान गुरुग्राम के एसजीटी विश्वविद्यालय में कृषि बागवानी व संबंद्ध विज्ञान में अभिनव दृष्टिकोण विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। इसके अलावा डॉ. सरिता रानी ने पोस्टर के माध्यम से गेहूं की किस्मों व शाकनाशी मिश्रणों का पत्ती व शुष्क पदार्थ विभाजन शीर्षक पर बेहतरीन प्रस्तुति देकर दूसरा स्थान भी प्राप्त किया। डॉ. सरिता रानी की इस उपलब्धि पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने उन्हें बुधवार को बधाई दी। यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन आईएसएचआरडी चंडीगढ़, एसजीटी विश्वविद्यालय गुरुग्राम व जस्ट एग्रीकल्चर मैगजीन ने संयुक्त रूप से किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	13-4-23	3	1-2

डॉ. सरिता को मिला डॉ. एमएस स्वामीनाथन अवार्ड

हिसार में बुधवार को डॉ. सरिता रानी को सम्मानित करते हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। -निस

हिसार (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र, कुरुक्षेत्र में कार्यरत जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) डॉ. सरिता रानी को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने पर डॉ. एमएस स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान गुरुग्राम के एसजीटी विश्वविद्यालय में कृषि बागवानी व संबद्ध विज्ञान में अभिनव दृष्टिकोण विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। इसके अतिरिक्त डॉ. सरिता रानी ने पोस्टर के माध्यम से गेहूं की किस्मों व शाकनाशी मिश्रणों का पत्ती व शुष्क पदार्थ विभाजन शीर्षक पर बेहतरीन प्रस्तुति देकर दूसरा स्थान भी प्राप्त किया। डॉ. सरिता रानी की इस उपलब्धि पर हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बधाई दी। यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन आईएसएचआरडी चंडीगढ़, एसजीटी विश्वविद्यालय गुरुग्राम व जस्ट एग्रीकल्चर मैगजीन ने संयुक्त रूप से 29 से 31 मार्च के दौरान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13-4-23	2	1-2

हकृवि में डॉ. सरिता रानी को डॉ. एमएस स्वामीनाथन अवार्ड से किया सम्मानित

सिटी रिपोर्टर • चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कुरुक्षेत्र में कार्यरत जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) डॉ. सरिता रानी को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने पर डॉ. एम.एस स्वामीनाथन अवॉर्ड से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान गुरुग्राम के एसजीटी विश्वविद्यालय में 'कृषि बागवानी व संबद्ध विज्ञान में अभिनव दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अंतरर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. कंबोज ने भी उन्हें बधाई दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	13.4.23	5	7-8

खबरनामा

डॉ. सरिता रानी को सम्मानित करते हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

डॉ. सरिता रानी डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड से सम्मानित

हिसार, 12 अप्रैल (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कुरुक्षेत्र में कार्यरत जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) डॉ. सरिता रानी को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने पर डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया है।

उन्हें यह सम्मान गुरुग्राम के एस.जी.टी. विश्वविद्यालय में 'कृषि बागवानी व संबंद्ध विज्ञान में अभिनव दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। इसके अलावा डॉ. सरिता रानी ने पोस्टर के माध्यम से गेहूं की किस्मों व शाकनाशी मिश्रणों का पत्ती व शुष्क पदार्थ विभाजन शीर्षक पर बेहतरीन प्रस्तुति देकर दूसरा स्थान भी प्राप्त किया।

डॉ. सरिता रानी की इस उपलब्धि पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई दी।

यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन आई.एस.ए.एच.आर.डी. चंडीगढ़, एस.जी.टी. विश्वविद्यालय गुरुग्राम व जस्ट एग्रीकल्चर मैगजीन ने संयुक्त रूप से 29 से 31 मार्च के दौरान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	13.4.23	3	4

डा. सरिता रानी को मिला डा. एमएस स्वामीनाथन अवार्ड

जासं, हिसारः हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कुरुक्षेत्र में कार्यरत जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) डा. सरिता रानी को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने पर डा. एमएस स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया है।

उन्हें यह सम्मान गुरुग्राम के एसजीटी विश्वविद्यालय में कृषि बागवानी व संबंद्ध विज्ञान में अभिनव दृष्टिकोण विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। इसके अलावा डा. सरिता रानी ने पोस्टर के माध्यम से गेहूं की किस्मों व शाकनाशी मिश्रणों का पत्ती व शुष्क पदार्थ विभाजन शीर्षक पर बेहतरीन प्रस्तुति देकर दूसरा स्थान भी प्राप्त किया।

डा. सरिता रानी की इस उपलब्धि पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बधाई दी। यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन आइएसएएचआरडी चंडीगढ़, एसजीटी विश्वविद्यालय गुरुग्राम व जस्ट एग्रीकल्चर मैगजीन ने संयुक्त रूप से 29 से 31 मार्च के दौरान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	13.4.23	6	4-5

डॉ. सरिता रानी को सम्मानित करते हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

डॉ. सरिता रानी को डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड से नवाज़ा

हिसार, 12 अप्रैल (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कुरुक्षेत्र में कार्यरत जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) डॉ. सरिता रानी को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने पर डॉ. एम.एस स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान गुरुग्राम के एसजीटी विश्वविद्यालय में 'कृषि बागवानी व संबंद्ध विज्ञान में अभिनव दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। इसके अलावा डॉ. सरिता रानी ने पोस्टर के माध्यम से गेहूं की किस्मों व शाकनाशी मिश्रणों का पत्ती व शुष्क पदार्थ विभाजन शीर्षक पर बेहतरीन प्रस्तुति देकर दूसरा स्थान भी प्राप्त किया।

डॉ. सरिता रानी की इस उपलब्धि पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई दी। यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन आईएसएएचआरडी चंडीगढ़, एसजीटी विश्वविद्यालय गुरुग्राम व जस्ट एग्रीकल्चर मैगज़ीन ने संयुक्त रूप से 29 से 31 मार्च के दौरान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	12.04.2023		

डॉ. सरिता रानी को डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा

डॉ. सरिता रानी को सम्मानित करते हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कुरुक्षेत्र में कार्यरत जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) डॉ. सरिता रानी को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने पर डॉ. एम.एस स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान गुरुग्राम के एसजीटी विश्वविद्यालय में 'कृषि बागवानी व संबंद्ध विज्ञान में अभिनव दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अंतरर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। इसके अलावा डॉ. सरिता रानी ने पोस्टर के माध्यम से गेहूं की किस्मों व शाकनाशी मिश्रणों का पत्ती व शुष्क पदार्थ विभाजन शीर्षक पर बेहतरीन प्रस्तुति देकर दूसरा स्थान भी प्राप्त किया।

डॉ. सरिता रानी की इस उपलब्धि पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई दी। यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन आईएसएएचआरडी चंडीगढ़, एसजीटी विश्वविद्यालय गुरुग्राम व जस्ट एग्रीकल्चर मैगजीन ने संयुक्त रूप से 29 से 31 मार्च के दौरान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	12.04.2023	—	—

डॉ. सरिता रानी को डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 12 अप्रैल। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कुरुक्षेत्र में कार्यरत जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) डॉ. सरिता रानी को कृषि विज्ञान के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने पर डॉ. एम.एस स्वामीनाथन अवार्ड से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान गुरुग्राम के एसजीटी विश्वविद्यालय में 'कृषि बागवानी व संबंद्ध विज्ञान में अभिनव दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित 3 दिवसीय अंतरर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। इसके अलावा डॉ. सरिता रानी ने पोस्टर के माध्यम से गेहूं की किस्मों व शाकनाशी मिश्रणों का पत्ती व शुष्क पदार्थ विभाजन शीर्षक पर बेहतरीन प्रस्तुति देकर दूसरा स्थान भी प्राप्त किया। डॉ. सरिता रानी की इस उपलब्धि पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई दी। यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन आईएसएएचआरडी चंडीगढ़, एसजीटी विश्वविद्यालय गुरुग्राम व जस्ट एग्रीकल्चर मैगजीन ने संयुक्त रूप से 29 से 31 मार्च के दौरान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	13-4-23	3	5-8

किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी में मोटे अनाज की खेती करने के लिए किया प्रेरित

हिसार, 12 अप्रैल (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग की अखिल भारतीय समन्वित ज्वार अनुसंधान परियोजना-हिसार केंद्र द्वारा गांव गंगवा में कदन्न फसलों के महत्व एवं उन्नत खेती विषय पर किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा उपस्थित रहे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ग्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिलेट्स) की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

मुख्यातिथि डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज को अपने नियमित भोजन में शामिल करना चाहिए। जहाँ एक ओर मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं, वहीं दूसरी तरफ ये पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष-2023 में जागरूकता अभियानों के कारण मोटे अनाजों की मांग बढ़ रही है। इसलिए किसानों को इन फसलों की खेती करना लाभप्रद होगा। उन्होंने बताया कि महिलाओं को भोजन की थाली में मोटे अनाजों को शामिल कर इनके स्वादिष्ट एवं पौष्टिक व्यंजन बनाने चाहिएं, ताकि नई पीढ़ी के बच्चे भी रुचि के साथ इनका सेवन कर सकें।

किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी के दौरान मौजूद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, सहायक सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल व अन्य।

डॉ. पम्मी कुमारी ने मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी की उन्नत किस्मों की जानकारी दी। डॉ. बजरंग लाल शर्मा ने कदन्न फसलों में कीट प्रबंधन के बारे में बताया। डॉ. डी.एस. फौगाट ने बताया कि मोटे अनाज वाली फसलें पोषक तत्वों का बेहतरीन स्त्रोत हैं। इसलिए हमें भोजन में शामिल करके अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं। सहायक सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने मोटे अनाज वाली फसलों की सस्य क्रियाओं की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	13.4.23	3	1-3

मोटे अनाज को नियमित भोजन में शामिल करें

जागरण संवाददाता, हिसार: हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग की अखिल भारतीय समन्वित ज्वार अनुसंधान परियोजना-हिसार केंद्र द्वारा गांव गंगवा में कदन्न फसलों के महत्व एवं उन्नत खेती विषय पर किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा उपस्थित रहे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया। मुख्यातिथि डा. एसके पाहुजा ने बताया कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज को अपने नियमित भोजन में शामिल करना चाहिए। जहां एक ओर मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं ये पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण के लिए हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि अन्तरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष-2023 में जागरूकता अभियानों के कारण मोटे

किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी के दौरान मौजूद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा व सहायक सस्य वैज्ञानिक डा. सतपाल सहित अन्य।

अनाजों की मांग बढ़ रही है इसलिए किसानों को इन फसलों की खेती करना लाभप्रद होगा। महिलाओं को भोजन की थाली में मोटे अनाजों को शामिल कर इनके स्वादिष्ट एवं पौष्टिक व्यंजन बनाने चाहिए ताकि बच्चे भी रूचि के साथ इनका सेवन कर सकें। डा. पम्मी कुमारी ने मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी की उन्नत किस्मों की जानकारी दी। डा. बजरंग लाल शर्मा ने कदन्न फसलों में कीट प्रबंधन के बारे में बताया।

डा. डीएस फौगाट ने बताया कि मोटे अनाज वाली फसलें पोषक तत्वों का बेहतरीन स्त्रोत है। भोजन में शामिल कर स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं। डा. मंजीत ने कदन्न फसलों में लगने वाले रोगों व उनके निवारण के बारे में बताया। सहायक सस्य वैज्ञानिक डा. सतपाल ने मोटे अनाज वाली फसलों की सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि रागी कैल्शियम व पोटेशियम का बेहतरीन स्त्रोत है वहीं चेन्ना और कुटकी विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा केरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डा. सतपाल ने मंच का संचालन किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	13.4.23	3	1-4

मोटे अनाज के व्यंजन बनाएं, जिसे बच्चे भी रुचि से खाएं

गांव गंगवा में आयोजित किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी में मोटे अनाज की खेती करने के लिए किया प्रेरित

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के चारा अनुभाग की अखिल भारतीय समन्वित ज्वार अनुसंधान परियोजना केंद्र की तरफ से गांव गंगवा में कदन्न फसलों के महत्व एवं उन्नत खेती विषय पर किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी में मुख्यातिथि एचएयू के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने महिलाओं से मोटे अनाज का स्वादिष्ट व्यंजन बनाने व नियमित भोजन में शामिल करने की अपील करते हुए कहा कि स्वादिष्ट होने पर ही बच्चे खाएंगे, जिससे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाज की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया। मुख्यातिथि डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज को अपने नियमित भोजन में शामिल करना चाहिए। मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं। इनमें पोषक तत्व भी भरपूर होते हैं। वर्तमान फसल चक्र में बदलाव करके परंपरागत मोटे अनाज वाली फसलों ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सांवक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा।

गंगवा गांव में आयोजित गोष्ठी में अतिथियों का स्वागत करते आयोजक। संवाद

पोषक तत्वों से भरपूर हैं मोटे अनाज

मंच का संचालन कर रहे सहायक सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने ने बताया कि मोटे अनाज में रागी कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्रोत है। वहीं चेन्ना और कुटकी विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा केरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13-4-23	2	4-5

थाली में मोटे अनाजों के स्वादिष्ट व्यंजन शामिल करें : डॉ. पाहुजा

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग की अखिल भारतीय समन्वित ज्वार अनुसंधान परियोजना-हिसार केंद्र ने गांव गंगवा में कदन्न फसलों के महत्व एवं उन्नत खेती विषय पर किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में एचएयू कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा उपस्थित रहे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

मुख्यातिथि डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज को अपने नियमित भोजन में शामिल करना चाहिए। जहां एक ओर मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं, वहीं दूसरी तरफ ये पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	13.4.23	6	3-6

थाली में मोटे अनाजों के स्वादिष्ट व्यंजन शामिल करें ताकि बच्चे भी रूचि के साथ खाएं : डॉ. पाहुजा

गंगवा में आयोजित किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी में मोटे अनाज की खेती करने के लिए किया प्रेरित

हिसार, 12 अप्रैल (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग की अखिल भारतीय समन्वित ज्वार अनुसंधान परियोजना-हिसार केंद्र द्वारा गांव गंगवा में कदन्न फसलों के महत्व एवं उन्नत खेती विषय पर किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा उपस्थित रहे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी के दौरान मौजूद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा व सहायक सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल सहित अन्य।

मुख्यातिथि डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज को अपने नियमित भोजन में शामिल करना चाहिए। जहाँ एक ओर मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण हेतू हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष-2023 में जागरूकता अभियानों के कारण मोटे अनाजों की मांग बढ़ रही है इसलिए किसानों को इन फसलों की खेती करना लाभप्रद होगा। उन्होंने बताया कि महिलाओं को भोजन की थाली में मोटे अनाजों को शामिल कर इनके स्वादिष्ट एवं पौष्टिक व्यंजन बनाने चाहिए ताकि नई पीढ़ी के बच्चे भी रूचि के साथ इनका सेवन कर सकें।

डॉ. पम्मी कुमारी ने मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी की उन्नत किस्मों की जानकारी दी। डॉ. बजरंग लाल शर्मा ने कदन्न फसलों में कीट प्रबंधन के बारे में बताया। डॉ. डी.एस. फौगाट ने बताया कि मोटे अनाज वाली फसलें पोषक तत्वों का बेहतरीन स्त्रोत है। इसलिए हमें भोजन में शामिल करके अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं। डॉ. मंजीत ने कदन्न फसलों में लगने वाले रोगों व उनके निवारण के बारे में बताया। सहायक सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने मोटे अनाज वाली फसलों की सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मोटे अनाज में रागी कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्त्रोत है वहीं चेन्ना और कुटकी विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	13-4-23	10	2-5

थाली में मोटे अनाजों के स्वादिष्ट व्यंजन शामिल करें

■ गांव गंगवा में आयोजित किसान वैज्ञानिक संगोष्ठी में मोटे अनाज की खेती करने के लिए किया प्रेरित

हिसार। संगोष्ठी में मौजूद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके. पाहुजा व अन्य।

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग की अखिल भारतीय समन्वित ज्वार अनुसंधान परियोजना-हिसार केंद्र द्वारा गांव गंगवा में कदन्न फसलों के महत्व एवं उन्नत खेती विषय पर किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा उपस्थित रहे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटें अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया। मुख्यातिथि डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज को अपने नियमित भोजन में शामिल करना चाहिए। जहां एक ओर मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण के लिए हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि अन्तरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष-2023 में जागरूकता अभियानों के कारण मोटे अनाजों की मांग बढ़ रही है इसलिए किसानों को इन फसलों की खेती करना लाभप्रद होगा। उन्होंने बताया कि महिलाओं को भोजन की थाली में मोटे अनाजों को शामिल कर इनके स्वादिष्ट एवं पौष्टिक व्यंजन बनाने चाहिए ताकि नई पीढ़ी के बच्चे भी रूचि के साथ इनका सेवन कर सकें। डॉ. पम्मी कुमारी ने मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी की उन्नत किस्मों की जानकारी दी। डॉ. बजरंग लाल शर्मा ने कदन्न फसलों में कीट प्रबंधन के बारे में बताया। डॉ. डी.एस. फौगाट ने बताया कि मोटे अनाज वाली फसलें पोषक तत्वों का बेहतरीन स्रोत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	12.04.2023		

किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी में मोटे अनाज की खेती करने के लिए किया प्रेरित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग की अखिल भारतीय समन्वित ज्वार अनुसंधान परियोजना-हिसार केंद्र द्वारा गांव गंगवा में कदन्न फसलों के महत्व एवं उन्नत खेती विषय पर किसान-वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा उपस्थित रहे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिल्लेट्स) की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

मुख्यातिथि ने बताया कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज को अपने नियमित भोजन में शामिल करना चाहिए। जहाँ एक ओर मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण हेतू हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी,

कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष-2023 में जागरूकता अभियानों के कारण मोटे अनाजों की मांग बढ़ रही है इसलिए किसानों को इन फसलों की खेती करना लाभप्रद होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	12.04.2023		

थाली में मोटे अनाजों के स्वादिष्ट व्यंजन शामिल करें ताकि बच्चे भी रूचि के साथ खाएं : डॉ. एस. के. पाहुजा

हिसार, 12 अप्रैल (समस्त हरियाणा न्यूज)। अखिल भारतीय समन्वित ज्वार अनुसंधान परियोजना-हिसार केंद्र द्वारा गांव गंगवा में कदन्न फसलों के महत्व एवं उन्नत खेती विषय पर किसान-

वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा उपस्थित रहे। उन्होंने पोषण सुरक्षा के लिए बाजरा, ज्वार, रागी जैसे मोटे अनाजों (मिलेट्स) की खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया। मुख्यातिथि डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज को अपने नियमित भोजन में शामिल करना चाहिए। जहाँ एक ओर मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण हेतू हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि महिलाओं को भोजन की थाली में मोटे अनाजों को शामिल कर इनके स्वादिष्ट एवं पौष्टिक व्यंजन बनाने चाहिए ताकि नई पीढ़ी के बच्चे भी रूचि के साथ इनका सेवन कर सकें। डॉ. पम्मी कुमारी ने मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी की उन्नत किस्मों की जानकारी दी। डॉ. बजरंग लाल शर्मा ने कदन्न फसलों में कीट प्रबंधन के बारे में बताया। डॉ. डी.एस. फौगाट ने बताया कि मोटे अनाज वाली फसलें पोषक तत्वों का बेहतरीन स्त्रोत है। इसलिए हमें भोजन में शामिल करके अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं। डॉ. मंजीत ने कदन्न फसलों में लगने वाले रोगों व उनके निवारण के बारे में बताया। सहायक सस्य वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने मोटे अनाज वाली फसलों की सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मोटे अनाज में रागी कैल्शियम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्त्रोत है वहीं चेना और कुटकी विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा केरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। डॉ. सतपाल ने मंच का संचालन किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13-4-23	4	1-4

एचएयू की सलाह • उन्नत कृषि तकनीक से गन्ने की बेहतर पैदावार लें

गन्ने की उन्नत किस्में सीओएच-119 और सीओ-05011 की 15 मई तक करें बिजाई

महबूब अली | हिसार

गन्ना प्रदेश की प्रमुख फसलों में से एक है। चीनी के अलावा इथेनॉल एवं ऊर्जा उत्पादन में गन्ने की फसल का अहम योगदान है। प्रदेश में लगभग 1 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में गन्ना बोया जाता है, जिसकी औसत पैदावार करीब 325 क्विंटल प्रति एकड़ है। उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर गन्ने की बेहतर पैदावार ली जा सकती है, जिसमें बिजाई सही समय पर करनी जरूरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि गन्ने की ग्रीष्मकालीन बिजाई का उपयुक्त समय 15 अप्रैल से 15 मई है। देर से बुवाई की स्थिति में केवल मध्यकालीन किस्मों (सीओएच 119, सीओ 05011) को अप्रैल में या गेहूं की कटाई के बाद लगाएं।

बिजाई के पांच से छह सप्ताह बाद पहली सिंचाई करें

सहायक वैज्ञानिक डॉ. नवीन काम्बोज ने बताया कि बिजाई के समय खरपतवारनाशी एट्राजीन नहीं डाल पाएं तब पहली सिंचाई के बाद गोड़ाई करके एट्राजीन का छिड़काव करें। मोथा घास (डीला) की रोकथाम को सैंपरा (75 प्रतिशत हैलोस्लफयूरान मिथाईल) का 36 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बिजाई के 35-45 दिन बाद जब मोथा घास 3-5 पत्ती की हो तब फलैट फैन नोजल से स्प्रे करें। बिजाई के पांच से छः सप्ताह बाद पहली सिंचाई करें। मानसून से पहले 10 दिनों के अन्तर पर सिंचाई करें। सहायक वैज्ञानिक डॉ सतपाल ने बताया कि खाद प्रबंधन में यदि गन्ना, गेहूं की कटाई के बाद बोया गया है तो आधी मात्रा नाइट्रोजन की और पूरी मात्रा फास्फोरस व पोटाश की बिजाई के समय डालें तथा शेष बची हुई नाईट्रोजन की मात्रा जून के अन्त में डालें। यदि गन्ना बलुई-दोमट भूमि में बोया जाए तो 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें।

रोगी खेत में कम से कम तीन साल तक फसल-चक्र अपनाएं

निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि बीज के लिए उपयुक्त गन्ने का नम-गर्म शोधन मशीन से 54 डिग्री से. पर दो घंटे तक उपचारित करें। बीज गन्ना को मैनकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर के घोल में 4-5 मिनट तक डुबोकर उपचार करें। एक एकड़ की बिजाई के लिए 100 लीटर घोल पर्याप्त है। रोगी खेत में तीन साल तक फसल-चक्र अपनाएं। 20 किलोग्राम प्रति एकड़ पूरा फॉस्फोरस, पूरा पोटाश व एक-तिहाई नाईट्रोजन बिजाई के समय, एक-तिहाई नत्रजन दूसरी सिंचाई तथा एक-तिहाई नाइट्रोजन चौथी सिंचाई के साथ डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13-4-23	4	5

कपास की हाईब्रिड किस्मों की 15 अप्रैल तक बिजाई कर पाएं अधिक पैदावार

भास्कर न्यूज | हिसार

कपास की बिजाई 15 अप्रैल से जून के पहले सप्ताह तक की जा सकती है। मई का पूरा महीना कपास की बिजाई के लिए सर्वोतम होता है। महेंद्रगढ़, भिवानी और डबवाली में मिट्टी रेतीली है। वहां कपास की बिजाई अप्रैल के पहले पखवाड़े में करें। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने बताया कि हरियाणा की खरीफ की नकदी फसलों में कपास का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रदेश में लगभग 6 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कपास बिजाई की जाती है, जिसकी औसत पैदावार प्रति एकड़ 4-5 क्विंटल है। उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर कपास की बेहतर पैदावार ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि अधिक मुनाफे के लिए अप्रैल में बिजाई की गई बीटी कपास में मूंग का अतः फसलीकरण भी किया जा सकता है। **अमरीकन कपास की किस्में** : एच 1098, एच 1117, एच 1226, एच 1098 संशोधित, एच 1236 व एच 1300, एच एच एच 223 (हाईब्रिड) व एच एच एच 287 (हाईब्रिड) - देसी कपास की किस्में : एच डी 123, एच डी 324 व एच डी 432 एवं ए ए एच 1 (हाईब्रिड) **भूमि व खेत की तैयारी** : रेतीली, लूणी व सेम वाली भूमि को छोडक़र सभी प्रकार की भूमि में कपास की खेती की जा सकती है।